

## इस्लाम की सुंदरता (3 का भाग 3): ईश्वर को सुंदरता पसंद है

रेटगि:

वविरण:

?

श्रेणी: [लेख इस्लाम के फायदे सच्ची खुशी और मन की शांति](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2012 IslamReligion.com)

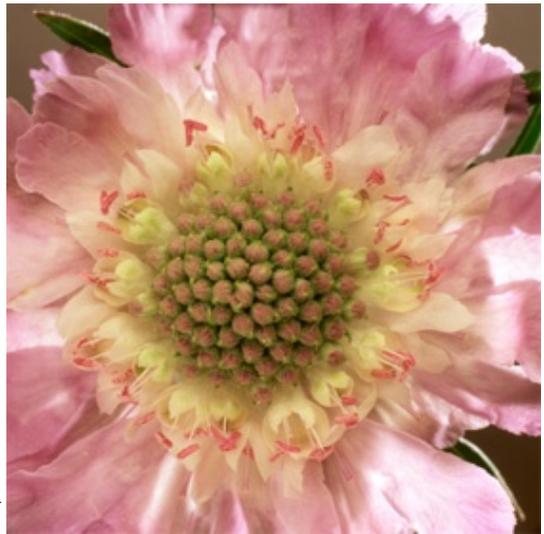
पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधति: 04 Nov 2021

### 8. पुरुषों और महिलाओं की समानता

कुरआन कहता है कि सभी विश्वास करने वाले एक समान हैं और केवल अच्छे काम ही एक व्यक्ति को दूसरे से अलग बनाते हैं। इसलिए विश्वास करने वाले पवित्र पुरुषों और महिलाओं का बहुत सम्मान करते हैं और इस्लामी इतिहास हमें यह भी बताता है कि पुरुषों और महिलाओं दोनों ने सभी कष्टों में सेवा की और अच्छा काम किया। पुरुष की तरह ही एक महिला भी ईश्वर की पूजा करने और अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए बाध्य है।

इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक महिला गवाही दे कि ईश्वर के अलावा कोई और पूजा के योग्य नहीं है, और मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) उनके पैगंबर हैं; प्रार्थना करे; दान दे; उपवास करे; और अगर उसके पास साधन और क्षमता है तो ईश्वर के घर की तीर्थ यात्रा करे। प्रत्येक महिला के लिए यह भी आवश्यक है कि ईश्वर और उसके दूतों, उसकी कतिबों, उसके पैगंबरों, कयामत के दिन पर विश्वास करे और ईश्वर के आदेश पर विश्वास करे। यह भी आवश्यक है कि हर महिला ईश्वर की पूजा ऐसे करे जैसे कि वह उन्हें देख रही है।



**"और जो लोग अच्छा काम करेंगे, चाहे वो पुरुष हो या महिला, और ईश्वर के एक होने में विश्वास करेंगे, तो ऐसे लोग ही स्वर्ग में जायेंगे और उनके साथ जरा सी भी बेईमानी और जुल्म न होगा।"**

## (क़ुरआन 4:124)

इस्लाम हालांकिमानता है कि सिमानता का मतलब यह नहीं है कि पुरुष और महिला समान हैं। इनके शरीर क्रिया वज्जान, प्रकृति और स्वभाव में अंतर है। इसमें श्रेष्ठता या हीनता की बात नहीं है, बल्कि प्राकृतिक क्षमताओं और जीवन में अलग-अलग भूमिका निभाने की बात है। इस्लाम के कानून न्यायसंगत और नष्पिक्ष हैं और इन पहलुओं को ध्यान में रखते हैं। पुरुषों को काम करने और अपने परिवार का भरण-पोषण करने का काम सौंपा गया है और महिलाओं को मातृत्व और घर संभालने का काम सौंपा गया है। इस्लाम हालांकि कहता है कि काम करने के ये नियम वशिष नहीं हैं और न ही कड़े हैं। महिलाएं काम कर सकती हैं या समाज की सेवा कर सकती हैं और पुरुष अपने बच्चों या अपने घर की जम्मेदारी ले सकते हैं। यह ध्यान रखना दलिचस्प है कि यदि महिलाएं काम कर के पैसा कमाती हैं तो वह उनका अपना होता है, हालांकि एक पुरुष पूरे परिवार के लिए आर्थिक रूप से जम्मेदार होता है।

## 9. मनुष्य पछिले कार्यों का पछतावा कर सकता है और सुधर सकता है

मुसलमानों का मानना है कि मनुष्य सुधर सकता है; और वे यह भी मानते हैं कि ऐसा करने में सफलता की संभावना वफिलता की संभावना से अधिक है। और वे ऐसा इसलिए मानते हैं क्योंकि ईश्वर ने मानवजात को सुधरने का मौका दिया है, एक बार नहीं बल्कि बार-बार क़यामत के दिन तक। ईश्वर ने प्रत्येक राष्ट्र में दूत और पैगंबर भेजे। कुछ हम क़ुरआन और पैगंबर मुहम्मद के जरिये जानते हैं, अन्य केवल ईश्वर को पता है।

**"और प्रत्येक समुदाय या राष्ट्र के लिए एक दूत है; जब उनका दूत आएगा तो उनके बीच न्यायपूर्वक फैसला किया जाएगा, और उन पर कोई जुल्म न होगा।" (क़ुरआन 10:47)**

ईश्वर किसी व्यक्ति को तब तक जम्मेदार नहीं ठहराता जब तक कि उसे स्पष्ट रूप से सही मार्ग न दिखाया गया हो।

**"...और हम तब तक सज़ा नहीं देते जब तक कि हम एक दूत न भेज दें।" (क़ुरआन 17:15)**

इसके साथ ही हम सत्य को खोजने के लिए जम्मेदार हैं और सत्य मलि जाने पर हमें इसे स्वीकार करना चाहिए और इसके अनुसार अपने जीवन को सुधारना चाहिए। पछिले बुरे कार्यों को भूल जाना चाहिए। ऐसा कोई पाप नहीं जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता!

**"कह दो, 'ऐ मेरे बन्दो, जनिहोंने अपने आप पर ज्यादाती की है, ईश्वर की दयालुता से नरिश न हो। नसिंसंदेह ईश्वर सभी पापों को क्षमा कर देता है। नसिसन्देह वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है" (कुरआन 39:53)**

एक व्यक्तिको अतीत के लिए ईमानदारी से पश्चाताप करके और यदि वह मुसलमान नहीं है तो उसे इस्लाम धर्म अपना के ईश्वर की दया का लाभ उठाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्तिको आस्था, विश्वास और कर्म को मिलाकर अपने उद्धार के लिए कार्य करना चाहिए।

## **10.ईश्वर सुंदरता को उसके सभी रूपों में पसंद करता है**

पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "कोई भी स्वर्ग में नहीं जायेगा जिसके दिल में चीटी के वजन के बराबर घमंड होगा।" "क्या होगा अगर एक आदमी अच्छा देखने के लिए अच्छे कपड़े और अच्छे जूते पहने?" उन्होंने कहा, "ईश्वर सुंदर है और सुंदरता को पसंद करता है। घमंड का मतलब है सच्चाई को नकारना और लोगों को नीचा दिखाना।" [\[1\]](#)

सुंदरता कुरूपता के विपरीत है। सृष्टि में मौजूद सुंदरता ईश्वर की सुंदरता के साथ-साथ उनकी शक्ति का भी प्रमाण है। जिसने सुंदरता बनाई वह सुंदरता का सबसे अधिक हकदार है। और वास्तव में स्वर्ग इतना सुंदर है जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता। ईश्वर सुंदर है और इसलिए स्वर्ग के सभी सुखों में सबसे बड़ा सुख ईश्वर के चेहरे को देखना है। ईश्वर कहता है,

**"कतिने ही चेहरे उस दिन प्रफुल्लति होंगे, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे।" (कुरान 75:22-23)**

वह अपने नामों को सबसे सुंदर बताता है:

**"और सभी सुंदर नाम ईश्वर के हैं, उन्हें इन्हीं नामों से पुकारो..." (कुरआन 7:180)**

प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान इब्न अल-कय्यम, अल्लाह उन पर रहम करे, ने इस्लाम की सुंदरता के बारे में नमिनलखिति कहा था:

"ईश्वर की पहचान उसकी सुंदरता से होनी चाहिए जिसका किसी और से कोई मेल नहीं है, और उसकी पूजा उस सुंदरता से करनी चाहिए जैसे वह शब्दों, कर्मों और व्यवहार से प्यार करता है। वह अपने दासों से प्रेम करता है कवि अपनी जीभ को सच्चाई से सुशोभति करें, अपने दिलों को सच्ची भक्ति, प्रेम, पश्चाताप और उस पर विश्वास से सुशोभति करें, अपने मन को उसकी आज्ञा से शांत करें; वह उनके कपड़ों में अपना आशीर्वाद दिखाकर उनके शरीर को सुशोभति करने के लिए प्यार करता है और

कसी भी गंदगी या अशुद्धता से मुक्त रखकर, जनि बालों को हटाना है उन्हें हटाकर, खतना करके और नाखूनों को काटकर उनके शरीर को सुशोभित करने के लिए प्यार करता है। इस प्रकार वे सुंदरता के इन गुणों से ईश्वर को पहचानते हैं और सुंदर शब्दों, कर्मों और व्यवहार से उनके करीब जाने का प्रयास करते हैं। वे उन्हें उस सुंदरता के लिए स्वीकार करते हैं जो उनकी वशिषता है और वे उनकी पूजा उस सुंदरता के माध्यम से करते हैं जैसे उसने निर्धारित किया है और उनके धर्म के लिए।<sup>[2]</sup>

---

फुटनोट:

[1] सहीह मुस्लिमि

[2] अल-फ़वायद (1/185)

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/5228>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।